आपातकाल

में

सृजन फुलवारी

नीर सोनी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

नीर सोनी

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-204-3
संपादक -डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष253159-07633 (.कार्या) -
मोबाईल9424765259 -
ईमेल -antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट -www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण 2020 -, नीर सोनी
मूल्य -5रूपये 0.00
मुद्रकशैलू कम्प्यूटर्स -, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY NEER SONI
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की-गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद विवाद के-लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना)covid (19जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्कीस दिन के लॉकडाउन में एक साथ किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित 55 संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीपटीना सोनी-, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	भूमिका- संदीप कुमार सोनी	6
2.	हमारे देश के वीर जवान	7
3.	हमारा प्यारा परिवार	8
4.	ईश्वर क्या है?	10
5.	मेरे प्यारे नानाजी	11
6.	मेरी मित्रता हुई मधुर भाषा के कारण	12
7.	ईश्वर जो करता है अच्छा ही करता ह	14
8.	त्योहारों में बाजार की सैर	16
9.	मेरे जीवन का लक्ष्य	19

भूमिका

प्रिय पाठकगण,
सादर अभिवंदन !

आपातकाल अर्थात कोविड-19 वायरस के कारण फैली महामारी कोराना। जिसने न सिर्फ भारत बल्कि संपूर्ण विश्व को अपनी चपेट में ले लिया। निश्चित ही यह ऐ भयावह काल है जिसमें हर व्यक्ति के मन में भय एवं आशंकाओं को जन्म दिया। ऐसे ही भयावह वातावरण में हमारी संपादिका डॉ प्रीति सुराना जी को एक अनुभूति हुई जिसमें उन्होंने समस्त साहित्यकारों को एक रचनात्मक कार्य हेतु प्रेरित किया।

सबसे बड़ी खुशी की बात तो यह रही कि अनेक साहित्यकार, रचनाकार, लेखकों ने इसमें बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। ऐसी ही एक छोटी सी बिटिया नीर सोनी जिसने सिर्फ अपने स्कूल, दोस्त, माता-पिता, और परिवार के मध्य हुए अपने जीवन के अनुभवों को अपनी नोटबुक में लिखा रखा था उसे हमने इस रचनाकारों की रचनाओं के साथ प्रकाशित करने का फैसला लिया जिससे उस नन्हीं लेखिका को अपनी लेखनी हेतु प्रोत्साहन मिल सके एवं उसके लिए सरप्राईज हो।

इसमें शामिल नीर के लेखन की वही बातें हैं जो उसने अपने अनुभवों के आधार पर संजो रखे थे। इसलिए यदि आप भी उसे प्रोत्साहित करेगें एवं अपना आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्रदान कर सकें तो एक नये कलाकार को आकार मिल सकेगा।

धन्यवाद!

तकनीकी संपादक

संदीप कुमार सोनी

हमारे देश के वीर जवान

लौटकर न आया वो जवान
देश को दुश्मनों की जंजीरों से
आजाद कराया वो जवान
अपने माँ-पिताजी की परवाह किये बिना
इस भारत माता की रक्षा करते
उसने दी अपनी कुर्बानी
घर लौटकर न आया वो जवान...!
जय हिन्द!

हमारा प्यारा परिवार

ईश्वर नें हमें अनेक चीजें दी है पर इनमें से जो सबसे प्यारी चीज है वह है परिवार। पहले मैं सोचती थी कि परिवार क्या होता है? पर धीरे-धीरे मुझे समझ आया कि परिवार वही होता है कि जिससे हम अपने सारे सुख-दूख बांट सकते हैं। हमारे बुरे वक्त में हमें प्रेरणा देते हैं। हमारी जीत में खुश हो जाते हैं। ऐसा ही हमारा भी परिवार है हँसला-खेलता, एक दुसरे को बुरे समय में प्रेरणा देनें।

अब मैं आपको अपने परिवार के बारे में बताना चाहती हूँ। बचपन से ही दीदी मुझे बहुत प्यार करती थी और अभी भी करती है। दीदी मुझे कभी नहीं डाटती थी और कभी डाटती भी थी तो मुझे इतना प्यार करती थी कि वह डाटना भुल जाती थी। कभी दीदी मुझे अपने साथ कपड़े खरीदने ले जाती, तो कभी चप्पल जूता। मुझे दीदी के साथ घुमने में बहुत मजा आता था। मैं बेफिक्र होकर दीदी के साथ घुमती थी। मैं कब से सोचती थी कि दीदी की शादी में बहुत मजा आयेगा। मजा तो आया परंतु जब दीदी की बिदाई का वक्त हुआ तब मेरी आँखें डबडबा गई। ऐसा लग रहा

था की हम दीदी को कैसे भी वापस ले आयें पर हम क्या कर सकते थे।

हमारे जीजाजी बहुत अच्छे हैं। वे बहुत नेकदिल के हैं। जब मैं उनसे मिली तब मैं उतनी खुलकर बात कर नहीं पाती थी। उनसे एक बार मिलने के बाद बहुत मजा आता है। जैसे होली के दिन ही हम सबने अलग-अलग चीजें सोच रखी थी की हम किस तरह जीजाजी को रंग लगा सकते हैं। हमने उन्हें रंगों से बेहाल कर दिया। उन्हें रंग लगाने में बहुत मजा आया। हमने उन्हें इतना रंग लगाया तब भी उन्होंने कुछ नहीं बोला कि उनका कपड़ा गंदा हो गया। इससे उनकी नेकदिली का पता चलता है। फिर शाम को नीचे बड़े पापा ने उन्हें खाने पे बुला लिया। हमने बहुत सारी तस्वीरें भी खिचवाई और जब हम यह तस्वीर देख रहे थे तब हम एक दुसरे को देखकर मजाक कर रहे थे। दूसरे दिन हमने उन्हें खाने पर बुलाया। हमने उन्हें गुपचुप खिलाया फिर खाने में पनीर कीी सब्जी और भनडीथी। मिठाई भी थी। आइस्क्रीम में तो मजा ही आ गया। यही एक हँसता खेलता परिवार है। मैं अपनी दीदी से बहुत प्यार करती हूँ और भगवान से यही इच्छा करती हूँ की मेरा परिवार हमेशा मेरे पास रहे और कभी मुझसे दूर न जाऐं। मैं अपने परिवार से बहुत प्यार करती हूँ।

ईश्वर क्या है?

लोगों ने अपनी धर्म जाति बना रखी है। ईश्वर में भी लोगों नें अपना हक बना रखा है। ईश्वर क्या होता है? ईश्वर वो इंसान होता है जिसने लोगों को मदद की, उनकी सारी जरूरत पूरी की बिना जाने की उनका धर्म क्या है? कयों है? यही महान लोग होते हैं जिन्हें हम ईश्वर कहते हैं। ईश्वर हमें कहते हैं कि 'बच्चों तुम मेरी पूजा मत करो, तुम मुझसे ज्यादा अच्छे कर्म करो और लोगो की मदद करो बिना उसका धर्म जानें'।

जिस तरह हमारी माँ हमें बचपन में अच्छी बातें सिखाती है अगर हमारी माँ हममें गोरे-काले, मोटे-पतले, आदि चीजों का अंतर करती तो हम कभी भी कामयाब न हो पाते। माँ तो बस यह चाहती है कि उनका बच्चा जीवन में उनसे भी ज्यादा तरक्की करे।

उसी तरह ईश्वर भी यही चाहते हैं कि हम भी इनसे ज्यादा अच्छे कर्म करें। अगर हमारे जो महान लोग है जिनको हमने ईश्वर बना रखा है वो लोग अगर यह सब चीज नहीं करते तो वे शायद आज हमारे ईश्वर न होते।

हमारे पूर्व राष्ट्रपति जी श्री अब्दूल कलाम जी ने कहा है कि- 'अच्छा इंसान वही होता है जो धर्म को लोगो को दोस्त बनाने और उनकी सहायता करने के लिए करें न कि उनसे लड़ाई करने के लिए'।

मेरे प्यारे नानाजी

नानाजी हमारी माँ, माँसी और मामा हमें बताते है कि आप उन्हें बचपन से ही बहुत अनुशासन में रखा करते थे। वह कहते है कि आज हम जो कुछ भी अपने अपने जीवन में कामयाबी हासिल कर पाए हैं वह आप लोगों के कारण है। आपकी दी हुई सीख उन्हें हमेशा याद रहेगी। और यही आशीर्वाद और सीख से हम भी अपने जीवन में आगे बढ़ रहे हैं।

नानाजी आपकी खामोशी मुझे आज समझ आयी। ‘‘पेड़ों की जड़े कभी पत्तियों की तरह फड़फड़ाया नहीं करती’’।

जीवन में कुछ भी उतना अच्छा नहीं है जितना अपने नानाजी का होना। वे अपने बच्चों से ईश्वर को पूजने जितना प्यार करते हैं।

नानाजी अगर आप ईश्वर से आसमान का एक तारा माँगे तो भगवान आपको सारा आसमान दे देगा।

जन्म दिवस की हार्दिक शुभकामनाऐं नानाजी...!

मेरी मित्रता हुई मधुर भाषा के कारण

इस दुनिया में अनेक लोग होते हैं। सबका अपना अलग ढंग होता है बात करने का। कोई अपनी मधुर भाषा से लोगों का मन मोह लेता है तो कोई थोड़ा कठोर होकर लोगों से बात करता है।

मधुर भाषा से कोई भी आपका मन जीत लेता है। आपकी वाणी कैसे हो यहह बहुत जरूरी होता है। अगर अच्छी और मधुर है तो आप अपनी परीक्षा में सफल हो गए नहीं तो पहले अपना व्यवहार ठीक करें, फिर कोशिश करें और उसके पीछे और मेहनत करों पर कोशिश जरूर करो।

'मेहनत से कोई भी काम किया जाए तो इंसान ही नहीं भगवान को भी जीता जा सकता है।' यह रहीम जी ने कहा था।

मैं मधुर वाणी के उपर छोटी सी कहानी बताना चाहती हूँ- एक देश में एक स्त्री की शहद की दुकान थी। उसकी मीठी वाणी के कारण उसकी दुकान पर बहुत भीड़ होने लगी। जल्द ही वह बहुत अमीर बन गई पर उसका व्यवहार न बदला। तब एक आदमी को उसकी सफलता से ईष्र्या होने लगी और उसने सोचा कि वह भी शहद की दुकान लगायेगा। पर उसके कठोर व्यवहार के कारण उसे असफलता प्राप्त हुई।

किसी महान पुरूष ने कहा है कि- ''मधुर वाणी बोलना एक महंगा शौक है। जो हर किसी के बस की बात नहीं''।

मेरी भी मित्रता मेरे दोस्तों से उनके मधुर भाषा के कारण हुई। मेरे मित्रों ने मुझे मधुर भाषा की बहुत अच्छी सीख दी थी। जब हम सब कक्षा चैथी में थे तब कुछ दिनों तक मेरा मन थोड़ा कठोर हो गया था। मै अपने दोस्तों से बहुत कठोर तरीके से बात करने लगी तब उन्हें बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। उन्होंने सोचा कि वे सब मिलकर मुझे सबक सिखायेंगे। तो उन्होंने मुझसे अगले दिन बहुत कठोरता से बात की तो मुझे अच्छा नहीं लगा। तब उन्होंने मुझे समझाया कि हमें हर किसी से मधुर वाणी में बात करनी चाहिए। कठोरता से हर काम बिगड़ता है।

'जो व्यवहार हमें अपने लिए पसंद नहीं, वह व्यवहार दूसरों के साथ कभी न करें।' इस तरह मुझे अपनी गलती का अहसास हुआ और मैं हर किसी से मधुर भाषा से बात करती हूँ। चाहे मुझे गुस्सा भी आ रहा हो, मित्रो नें मुझे उस दिन बहुत बड़ी सीख दी।

प्रभू ने मित्र हमारे लिए ही बनाया है और कोई इंसान अपना जीवन नहीं काट सकता। सभी को अपने दुख-सुख बताने के लिए कोई न कोई चाहिए ही होता है। मित्रता एक या अलग जुनून, भावना, या विचार के व्यक्तियों के साथ विकसित हो सकती है।

दोस्त शब्द का अथ ही बड़ा मस्त होता है - हमारे 'दोष' का जो 'अस्त' कर दे वही दोस्त होता है।

ईश्वर जो करता है अच्छा ही करता है

हमारे साथ इस जीवन में बहुत कुछ घटनायें होती है। कभी अच्छी तो कभी बुरी और इन घटनाओं का श्रेय हम ईश्वर को देते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि हमारे साथ भगवान ऐसा क्यों कर रहे हैं? और हमारे साथ ही इतना बुरा क्यों होता है?

कई बार हमारे साथ कुछ ऐसा हो जाता है कि जिसको हम उस समय पर खराब समझते हैं लेकिन अंत में हमको पता चल जाता है कि भगवान ने जो कुछ भी हमारे साथ किया था वह अच्छे के लिए किया था। और यही मै इस कहानी के माध्यम से एहसास कराना चाहती हूँ।

एक औरत को समुद्र देखने का बहुत शौक था। तो वह समुद्र देखने गई और उसने कहा अब मुझे समुद्र की सैर करनी है। उसने एक नाव तत्काल में ली और निकल पड़ी। वह थोड़ा ही दूर पहुँची कि तुफान शुरू हो गया और उसकी नाव डुब गई। तब वह लाईफ जैकेट लेकर समुद्र में कूद पड़ी और जाकर एक टापू पर अटक गई। उस टापू में कोई रहता थी नहीं था और टापू के चारो ओर समुद्र के अलावा कुछ भी नजर नहीं आ रहा था।

उसने वहाँ के कुछ फल तोड़कर अपना गुजारा करना शुरू कर दिया। वह सोचने लगी कि उसने क्या बुरा किया जो उसे यह

सब सहना पड़ रहा है। भगवान पर से उसका विश्वास उठ गया। उसे लगा कि दुनिया में भगवान होते ही नहीं है। उसने सोचा की अब पुरी जिंदगी टापू में बितानी है तो क्यों न एक झोपड़ी बना लूं।

फिर उसने झोपड़ी बनाई और सोचा कि आज से बाहर नहीं सोना पड़ेगा। रात हुई ही थी कि अचानक मौसम बदला, बिजलियाॅं कड़कने लगी। एक बिजली उस झोपड़ी पर आ गिरी और झोपड़ी धधकते हुए जलने लगी। यह देखकर वह औरत टूट गई और आसमान की ओर देखकर बोली- 'तु भगवान नहीं राक्षस है। तुझमें दया जैसा कुछ है ही नहीं, तु बहुत ही क्रुर है।' वह हताश होकर सर पर हाथ रखकर रो रही थी कि अचानक एक नाव टापू के पास आई। नाव से उतरकर दो आदमी आये और बोले कि हम तुम्हें बचाने आये हैं। दूर से इस टापू में जलती हुई झोपड़ी की रोशनी देखा तो लगा कि कोई उस टापू पर मुसीबत में है। अगर तुम अपनी झोपड़ी न जलाती तो हमें पता न चलता कि टापू पर कोई है।

उस औरत कि आँखों में आँसू आ गए। उसने ईश्वर से माफी मांगी और बोली लोग सहीं कहते है - 'ईश्वर जो करता है अच्छा करता है।'

त्योहारों में बाजार की सैर

भारत त्योहारों का देश है जहां पूरे साल अलग-अलग त्योहार बड़ी ही धूमधाम से मनाए जाते हैं। सभी त्योहारों का महत्व सभी लोगों के लिए अलग होता है। भारत में सभी धर्मों के लोग साथ मिल-जुलकर सारे त्योहार मनाते है। भारत में मनाये जाने वाले त्योहारों को हम तीन प्रकार से बांट सकते हैं - राष्ट्रीय त्योहार, धार्मिक त्योहार, और मौसमी त्योहार। इन तीनों त्योहारों में सभी स्कूलों, कालेजों, आदि में भी अनेक कार्यक्रमों जैसे निबंध प्रतियोगिता, कविता लेखन, भाषण आदि का आयोजन होता है। बच्चे त्योहार में खेलेत-कुदते रहते हैं। कुछ लोग अपने परिवार और दोस्तों के साथ त्योहार मनाते हैं और कुछ लोग आराम करना पसंद करते है।

बाजार वह स्थान है जहां पर वस्तुओं के क्रेता और विक्रेता एक साथ मिलकर वस्तुओं और सेवाओं का क्रय-विक्रय करते हैं। बाजार लोगों की आवश्यकता की पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहां से हम दैनिक जीवन की उपयोगी वस्तुऐं खरीदते हैं।

दीपावली का त्योहार हर किसी के लिए खुशियां लेकर आता है। हर कोई इस त्योहार को बड़े ही धूम-धाम से मनाता है। हमारे

देश में सभी धर्मों के लोग रहते हैं जैसे हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई आदि। यह सभी धर्मों के लोग अपने त्योहार पर बाजार की सैर करते नज़्ार आते हैं। विभिन्न प्रकार के त्योहार के कारण हमारे देश में बाजार का बहुत महत्व है।

मुझे अपने प्रिय त्योहार दीपावली पर बाजार जाने का मौका मिला। दीपावली का त्योहार हर किसीी के लिए खुशियां लेकर आता है हर कोई इस त्योहार को बड़े ही धूम-धाम से मनाना चाहता है। हर कोई इस त्योहार में नए कपड़े लेता है। बाजार में इतनी भीड़ होती है लगता है पांव रखने तक की जगह नहीं है। दूर गाँव-गाँव से लोग नए-नए कपड़े एवं अन्य सामग्री लेने के लिए आते हैं। दुकानदारों की तो किस्मत ही खुल जाती है। ज्यादातर लोग दीपावली में ही तो नए कपड़े लेते है।

इस बार की दीपावली में मैनें सोचा की अपने लिए कपड़े खरीदने के साथ साथ गरीब एवं अनाथ बच्चों के लिए भी कपड़े लूंगी। मै नये कपड़े लेने के लिए बाजार जा पहूंची वहां का हाल देखकर को कोई भी चक्कर खा कर गिर जाएगा। वहाँ हर प्रकार के लोग थे। गरीब से लेकर अमीरों तक।

जेसे-जैसे दीपावली करीब आती जा रही वैसे-वैसे बाजार में भीड़ बढ़ती जा रही है। बाजारों में यही सब चीजों की दुकाने दिखती

है जैस पूजा का सामान, रंगोली, दिया, फटाके, फल-फूल, मिठाई, और सबसे ज्यादा लोग। दीपावली से कई दिन पहले से गणेशजी, लक्ष्मीजी, की मूर्ति बाजारों में देखने को मिलती है। इस समय फूल बेचने वालों कि तो किस्मत ही खुल जाती है। जहाँ देखो तो बस फूल ही फूल के ठेले दिखाई पड़ते हैं।

हल्दी, मसाला, आम पत्ता, तुलसी, यह सब की तो बाजार अलग ही महत्व रखता है। लालटेन हर जगह टंगी रहती है। खैर बाजार में पहूंचकर मैनें अपने लिए कपड़े खरीदे फिर कुछ गरीब बच्चों एवं अनाथ बच्चों के लिए भी कपड़ों की खरीदी की। जब मैने यह नए कपड़े उन बच्चों को दिये तो वे खुशी के मारे फुले नहीं समा रहे थे। यह देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा। मेरी यह सबसे अच्छी दीपावली थी।

मैं उन लोगों को धन्यवाद करती हूँ जिनकी वजह से यह बाजार है। वहां के दुकानदार। दुकानदारों के बिना बाजार कैसा? बाजार लोगों की आवश्यकता की पूर्ति में बहुत महत्वपूर्ण भुमिका निभाता है।

मेरे जीवन का लक्ष्य

इस जीवन में हम मरने और जीने के लिए नहीं आए है। ऐसा जीवन पाना बहुत कठिन होता है जैसे - स्वस्थ रहना, अच्छा परिवार पाना, अच्छे से पढ़ना आदि। हमें इस जीवन को बर्बाद नही करना चाहिए और इसका अच्छे से सदोपयोग करना चाहिए। हमें हमारे जीवन में एक लक्ष्य लेकर आते हैं। हमारे माता-पिता हमें अच्छे से पढ़ा-लिखा कर बड़ा करते हैं ताकि हम उनका अधुरे सपनों को पुरा कर सकें। सब अपने जीवन में यह कहते है कि अगर हमें मौका मिलता है तो हम यह बन पाते और सब अपने बच्चों से यह कहते हैं 'मैं यह नहीं कर पाया पर तुम करना।'

वह उनका लक्ष्य वही सोच लेते हैं और उनकी इच्छा जाने बिना उन्हें उस चीज में डाल देते हैं और वह उसमें रूचि नहीं दिखाते हैं क्योंकि वह उनके काम की चीज नहीं है। बच्चे अपना लक्ष्य से परे हो जाते हैं। इस तरह वे जीवन में कुछ नहीं कर पाते

और वही रूक जाते हैं। उनके जीवन की राह डगमगा जाती है इसलिए बच्चों को ज्यादा दबाव नहीं डालना चाहिए।

हमारे स्कूलों में हमें बहुत प्रेरित किया जाता है कि हमें आगे चलकर अपने जीवन में क्या करना है। हमें अपना लक्ष्य स्वयं चुनना है, और जो हमें अपने दिल से लगता है कि हमे इस काम में रूचि है तो हमें उसी राह को चुनना चाहिए। मेरे जीवन का लक्ष्य है एक आई.ए.एस. अफसर बनना। मैंने सोच लिया है कि मैं यह काम करने के लिए बहुत मेहनत करूंगी तभी मुझे सफलता प्राप्त होगी। मेहनत से ही हर लक्ष्य पुरा हो सकता है 'उठो-जागो और आगे बढ़ो और तब तक न रूको, जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो।'

जब मैनें अपना लक्ष्य निर्धारित किया तब मुझे कुछ लोगों ने कहा अच्छी बात तुम अफसर बनकर बड़ा नाम कमाओ तो कुछ लोगों ने कहा "'अरे! क्या अफसर बन रही उससे बड़ा कुछ बनके दिखाओ तब हम मानें।' पर मैने सोचा कि मुझे बस अपने दिल की सुनना है। लोगों को काम तो सिर्फ बोलना होता है। अपनी राय

बस देते हैं। पर अगर वह स्वयं वह काम करें तब उन्हें पता चलेगा की खुद वह काम करने से क्या होता है।

सब के जीवन में उनकी एक प्रेरणा होती है। जैसे उनके अध्यापक, माता-पिता, भाई-बहन आदि। इन्हीं सबकी वजह से आज हमारे बीच जो भी महान हस्तियाँ मौजूद है। मेरे जीवन की प्रेरणा मेरे माता-पिता हैं उन्हीं से प्रेरित होकर आज मुझमें जो भी खुबियां है वह उन्हीं की वजह से है।

माँ से मुझे इस प्रकार प्रेरित किया। उन्होंने मुझे सिखाया कि हमें हर किसी से प्यार और शांत भाव से बात करनी चाहिए। चाहे वह हमसे बड़ा हो या छोटा। न ही हमें गलत बात सहनी चाहिए और उसके विरूद्ध कुछ करना चाहिए। पिताजी ने मुझे सिखाया मेहनत और समय का महत्व और की हमें जरूरत से ज्यादा होशियार नहीं बनना चाहिए। इस शिक्षा को समझकर मै और अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकती हूँ। मैं यह विचार अपने माता-पिता के लिए रखती हूँ।

कुछ लोगों का प्यार कभी कम नहीं होता, और उन महान लोगों को माता-पिता करते है।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

नीर सोनी

माखन विला
भारतमाता स्कूल के सामने
टाटीबंध, रायपुर

अन्तरा शब्दशक्ति ये नाम मैनें पहली बार मामा से सुना पर मुझे पता नहीं था कि मामा इसमें काम क्या करते हैं। मुझे लिखने का शौक है मैं कभी-कभी अपने विचारों को लिखना पसंद करती हूँ कई बातें जो मुझे अच्छी या बुरी लगे लिखकर मन हल्का हो जाता है। मेरे मम्मी-पापा को भी जब पता चला तो उन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया कि जो मन में आए खास कर अच्छे विचारों को लिखना चाहिए। ये उन्हीं की प्रेरणा है जो मुझे आगे बढ़ने को प्रेरित करती है।

मेरे नानाजी और नानीजी, मौसी, मामा-मामी और घर के सभी बड़ी मम्मी-बड़े पापा भैया, सभी से मुझे बहुत प्यार और प्रेरणा मिलती है। मैं अपनी छोटी-छोटी बातें उन सभी को देखकर जानकर या सुनकर ही लिखती हूँ।

मैनें तो सोचा भी नहीं था कि मैं जो लिखती हूँ वह कहीं छप भी सकता है। ये तो उन सभी का आशीर्वाद और प्यार ही है जो आज तक मुझे मिला है।

इस प्रकाशन के लिए अन्तरा शब्दशक्ति, मामा-मामी और सभी का धन्यवाद जो आप सभी ने मुझे इतना बड़ा उपहार दिया।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-204-3

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/